ईमानदारी

• ब्रह्माकुमार डॉ. संजय माली, पाचोरा

आत्मा को दिव्यता प्रदान करने वाले गुणसमुदाय में 'ईमानदारी' का स्थान सर्वोपरि है। ईमानदारी पवित्रता की जननी है। यही परमपद प्राप्ति का उत्तम साधन है तथा आत्मा को परमात्मा से जोड़ने वाला सेतुबंध है। ईमानदारी इंसानियत की शान है, आत्मा की सच्ची पहचान है। साधारण से साधारण व्यक्ति भी ईमानदारी के व्यवहार से महानता प्राप्त कर सकता है। जब कभी भी हम अपने आपकी ईमानदारी जाँचना आरंभ करते हैं तब दिव्यता की तरफ वह हमारा पहला कदम होता है। ईमानदारी परमात्मा के दैवी खजाने से प्राप्त होने वाला अत्यंत अमूल्य सद्गुण है। आओ चलें! अपनी ही अन्तरात्मा में ईमानदारी के स्वरूप को तलाश करें।

अंतर्बाह्य शुचिता का अभ्यास ही ईमानदारी है। मन, वचन, कर्म और स्वभाव की पारदर्शिता अथवा न्यायोचित कर्मपालन को ईमानदारी कहते हैं। पवित्रता के व्यवहारिक स्वरूप का दूसरा नाम ईमानदारी है। आचरण की परिपक्वता ईमानदारी का सृजन करती है। तप के द्वारा अंत:करण शुद्ध होने से व्यक्ति अंदर-बाहर सरल और एक-सा बन जाता है। सच्चे दिल पर साहेब राजी होता है। परमात्मा को यही पसंद है। गोस्वामी तुलसीदास जी के छंदों में –

निर्मल मन जन सो मोहि पावा।
मोहि छल छिद्र कपट न भावा।।

जिंदगी के सच्चे आनंद को पाने का तथा मृत्युंजयी बनने का सहज साधन है ईमानदारी। यही है अविनाशी पद तक सुरक्षित पहुँचाने वाला दिव्य आकाशयान। इसे भवसागर लांघने वाली मज़बूत नौका भी कह सकते हैं। संसार रूपी भयानक जंगल से सकुशल निकालने वाला यही है उत्तम पथप्रदर्शक। ईमानदारी हर संकट से हमारी रक्षा करने वाला परमशक्तिशाली सुरक्षा-कवच है। निर्भयता प्राप्त करने में तो यह बेजोड़ है। 'ईमान' मनुष्य को बहादुर बना देता है, अन्याय से लड़ने की शक्ति भरता है। संसार की किसी भी शक्ति का मूलस्त्रोत यही है। सचमुच यह अलौकिक है। महात्मा कबीर जी कहते हैं –

साँच बराबर तप नहीं,
झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदे साँच है,
वाके हिरदे आप।।

सत्य या ईमान से सब कुछ प्राप्त हो सकता है, परमात्मा भी। आदर्श आचरण वाले सत्पुरुष लोगों के दिलों पर राज करते हैं। ईमानदार भी किसी सम्राट से कम नहीं होता, उसके आगे सारा संसार नतमस्तक होता है। संसार की समूची दौलत भी ईमान के समक्ष अत्यंत तुच्छ तृणवत् है। क्या किसी भौतिक संपत्ति को ईश्वर के साथ मापा जा सकता है? हरगिज़ नहीं। नैतिकता ही ईमानदारी का दूसरा रूप है। नैतिक ही ईमानदार है और उसी का जीवन सार्थक है। कहते हैं, Honesty is the best policy अर्थात् ईमानदारी से बढ़कर कोई चीज नहीं। 'ईमानदार' का शाब्दिक विश्लेषण, 'ईश्वरीय मान देने योग्य' या ' ईश्वरीय मान्यता प्राप्त' ऐसा भी किया जा सकता है। जिसके व्यवहार और चिंतन में 'ईमान' है वही धरती का देवता कहलाता है। ईमानदारी के आचरण से हृदय में असीम शांति का अनुभव होता है। बेईमानी किसी को भी अच्छी नहीं लगती। वह हृदय में पीड़ा एवं मस्तिष्क में तीव्र क्षोभ उत्पन्न करती है। बेचैन मन में शांति कैसी?

ईमानदार सदा संतुष्ट, प्रसन्न और निर्भय दिखाई देता है। इसके ठीक विपरीत बेईमान हर घड़ी उदास, चिंतातुर, भयभीत और निस्तेज लगता है। धोखाधड़ी करने वाला थोड़ी देर के लिए भौतिक लाभ से ऊपरी खुशी पा भी ले लेकिन सच्ची एवं अविनाशी खुशी को वह कभी भी हासिल नहीं कर सकता। जैसे दीर्घकाल गुस्से में टिकना असंभव है

वैसे हमेशा ही बेईमानी सिर पर ढोना मुश्किल है। देर-सवेर अपनी गलती का अहसास आखिरकार हो ही जाता है। मस्तिष्क को संतप्त तथा हृदय को प्रताड़ित कर अपने आपको असहाय स्थिति में लाना आत्मवंचना है। बेईमानी मनुष्य को काँटों समान चुभती है और दु:खी बना देती है। ईमानदारी तो हृदय में हर्ष, मन में उल्लास एवं मस्तिष्क में ठंडक पहुँचाती हुई तन को भी आराम देती है। इसी से व्यक्ति आत्म-सम्मान अनुभव करता है। यही आत्मा का स्वधर्म है। इसे अपनाना ही सच्चा विवेक है। बेईमानी व्यक्ति को भीतर से कंगाल, लाचार तथा दीन बनाती है। यह तो सिर पर टंगी तलवार है; न जाने कब जख्म कर दे। जीने का मजा खत्म कर देती है बेईमानी। इसके कारण मनुष्य अपना स्वाभाविक आनंद खो देता है और जीते जी मृतक-सा अनुभव करता है।

परिस्थितियाँ कैसी भी हों, अनुकूल अथवा प्रतिकूल, सच्चाई से कर्त्तव्यपालन ईमानदारी है। वफादार मनुष्य, शालीन और श्रेष्ठ कहलाता है। उत्कृष्टता के लिए परम पुरुषार्थ अनिवार्य है। इंसान का वफादार होना ही उसकी सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि है। भौतिक संसार में इसकी बराबरी दूसरा कोई गुण नहीं कर सकता। ईमानदार व्यक्ति चाहे किसी भी क्षेत्र से संबंधित हो, सद्व्यवहार के कारण सबसे इज़्ज़त पाता है और निर्मल चरित्र से सबके गले का हार बन जाता है। ईमानदारी मनुष्य को तेजस्विता के साथ शांति भी प्रदान करती है। अच्छा काम करने वाला स्वाभिमान से जीता है। जो भ्रष्टाचारी है, वह कैसे सर उठाकर चल सकेगा?

बाल्यकाल से ही बच्चों को श्रमशिक्षा एवं ईमानदारी का महत्त्व समझाना चाहिए तभी वे ज़िम्मेदार नागरिक बन सकेंगे। बिना श्रम किए, दूसरों के हिस्से का छीनने वाले, अपने बच्चों के साथ क्या न्याय कर सकते हैं? बच्चे तो अनुकरणशील होते हैं। बड़ों के व्यवहार पर पैनी दृष्टि रखते हैं। वे जो देखते, सुनते हैं, उसी का अनुसरण करते हैं। पिता की अनुपस्थिति में यदि बड़ा भाई उनकी जेब से बिना पूछे पैसे हड़पता है तो अनजाने में छोटे में भी चोरी के संस्कार का बीजारोपण हो जाता है। माता-पिता का परस्पर व्यवहार तथा उनकी सच्चाई बच्चों पर अपना श्रेष्ठ प्रभाव छोड़ती है। ईमानदारी तो जीवन भर अभ्यास करने का विषय है। इसकी धारणा कठिन ज़रूर है पर प्रयास-साध्य है। किसी की अनावश्यक भेंटवस्तु या रिश्वत आदि पिता अस्वीकारते हैं तो बच्चों में भी सहज ईमानदारी देखी जा सकती है। न्यायोपार्जित या श्रमार्जित वस्तु पर ही हमारा अधिकार होता है। शास्त्रों में 'अपरिग्रह' नाम से कही गई बात को ठीक रीति से समझना आवश्यक है। 'ईमानदार' व्यापक अर्थ वाली संज्ञा है। कर्मकुशल, कर्त्तव्य तत्पर, निष्ठावान, नि:स्वार्थ, निष्कपट, निष्कलंक, निस्पृह, सदाचारी, समय का मूल्य समझने वाला, सत्यसंकल्पी, ध्येयवादी, दृढ़निश्चयी, दक्षचित्त, उत्साही, प्रज्ञावान, नीतिवान और राष्ट्रप्रेमी – ईमानदार में ये सभी गुण स्वत: प्रकट होने लगते हैं। राष्ट्रनिर्माण हो या सतयुगी समाज निर्माण, ईमानदार व्यक्ति ही ऐसे कार्यों की रीढ़ होते हैं, वे नेक और आदर्श होते हैं और अनायास ही लोकपसंद तथा प्रभुपसंद बन जाते हैं।

अपनी सत्ता एवं अधिकारों का उपयोग जनकल्याण के लिए करने वाला परोपकारी, सच्चे अर्थों में ईमानदार है। अपनी ऊर्जा से औरों को सताने वाला बेईमान है। ईमानदारी पुण्य बढ़ाती है और बेईमानी पाप। ईमानदार आदर का पात्र होता है और बेईमान उपेक्षा का पात्र – यही शाश्वत नियम है। मृत्यु तो अवश्य आनी है, इससे पहले ही सचेत रहना चाहिए और ईमान का आश्रय लेना चाहिए। ईमानदारी हर किसी का इहलोक और परलोक में भी भला करती है।

एक सज्जन की अचानक किसी बीमारी से कम उम्र में ही मृत्यु हो गई।

मेरे बीमा एजेंट मित्र ने ज़रूरी दस्तावेज़ों की आपूर्ति समय पर करके मृतक की विधवा को शीघ्र ही बीमा के पैसे उपलब्ध करवा दिए। दु:ख की घड़ी में ज़रूरी धन समय पर मिलने से उस स्त्री को बड़ा सुकून पहुँचा। उन्होंने मित्र को कुछ रुपये देने चाहे परंतु उन्होंने बड़ी विनम्रता से इंकार कर दिया। इसे कहते हैं ईमानदारी। विधवा का बयान था कि मुझे तो जीते-जी ही भगवान मिल गये हैं। मेरे मित्र दुआओं के पात्र हुए, कारण था ईमानदारी। ईमान के बिना कैसे संभव है जीना? इसके बिना तो जीवन मात्र एक मरुस्थल ही बनकर रह जायेगा –

फूल तो होंगे लेकिन
महक नहीं होगी।।
पंछी तो होंगे पर
चहक नहीं होगी।।
सितारे तो होंगे पर
चमक नहीं होगी।
चेहरे तो होंगे पर
दमक नहीं होगी।।

ईमानदारी ही जीवन का आधार है। यही सच्चा जीवन-रस है। अपने बूढ़े माँ-बाप की सेवा एवं अच्छी देखभाल – हर बच्चे का कर्त्तव्य है, यह तो अपने आप पर उपकार है। माता-पिता की सेवा करने से ही पुंडलिक वंदनीय हुए। सारा जीवन जिन्होंने बेटों के लालन-पालन एवं शिक्षा में लुटाया है उनकी उपेक्षा करना बहुत बड़ी बेईमानी है। माँ-बाप को भी चाहिये कि बच्चों को पहले से अच्छे संस्कार दें तथा उनके साथ एकसमान व्यवहार बरतें। एक को भला और दूसरे को बुरा कहने से बच्चे नाराज़ होते हैं और परिवार बँटते हैं। बहू के साथ द्वेषपूर्ण व्यवहार होता है तो वह घर, घर नहीं रह पाता, नर्क बन जाता है।

औरों के प्रति संवेदनशील होना, उनका दु:ख-दर्द समझना, उनसे हृदयपूर्वक प्रेम करना, उन्हें समझने की कोशिश करना, गुणग्राही बनना, दोषों को पचाना, भलाई को सराहना तथा बुराई की उपेक्षा करना आ गया तो मानो जीना आ गया। तोड़ना आसान है पर दिलों को जोड़ना महाकठिन कार्य है। इस बात को हर कोई समझे तो परिवार उजड़ने से बच सकते हैं। अपने को हम जितना ईमानदार बनाते चलेंगे उतना स्वयं को परमात्मा के निकट पाते चलेंगे। कबीर जी के शब्दों में –

कबीरा मन गाफिल भया,
सुमिरन लागे नाही।
घड़ी-सा है साँसणा,
जम की दरगाह माहि।।

सुमिरन का अर्थ है – ईश्वर स्मरण के साथ मूल्यनिष्ठ जीवन जीना। मन ग़ाफ़िल न रहे, समय पर जाग जाए और नीतिसंपन्न बन जाये तभी जीवन की सार्थकता को हम छू सकते हैं, दिव्यता पा सकते हैं। किसी ने ठीक ही कहा है – Education is not what a person learns but what he becomes अर्थात् हम क्या सीखते हैं, यह महत्त्व का नहीं, शिक्षा से हम क्या बनते हैं, यह बात ज़्यादा मायने रखती है।

ईमानदारी से जीवन-यापन करने के लिए मन को बहुत मज़बूत बनाना पड़ता है तथा कष्ट झेलने पड़ते हैं। फिर भी उसका आनंद ही कुछ और है। अविनाशी मिल्कियत को पाने के लिए मेहनत तो करनी ही पड़ेगी ना! बेईमान, असभ्य, अशिष्ट एवं चापलूस लोगों को तरक्की करते देख ईमानदार को डगमगाना नहीं चाहिए। इनकी तरक्की पत्ते के समान आधारहीन होती है, पता नहीं कब ढह जाये। भले आदमी को अपने मिशन पर अडिग रहना चाहिए।

❖

परमपिता परमात्मा शिव ज्ञान, योग, दिव्य गुणों की धारणा तथा सेवा की जो शिक्षा देते हैं, उस अनुसार आचरण करने वाले आत्मनिष्ठ तथा पवित्र लोगों के कर्म ही 'सत्कर्म', 'महान् कर्म', 'अलौकिक कर्म' अथवा 'दिव्य कर्म' होते हैं। इन कर्मों के द्वारा ही भविष्य में सतयुगी या त्रेतायुगी सृष्टि में पवित्रता, सुख तथा शान्ति रूपी प्रालब्ध प्राप्त होती है।